

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ बयासी

भविष्यसूचक गठबंधनों और युद्धों: प्राचीन सेल्युकस से आधुनिक भू-राजनीति तक

Jeff Pippenger

2024-04-12

पद तेरह और चौदह उस इतिहास की पहचान करते हैं, जब सेल्युकस और मकदूनिया के फिलिप एक गठबंधन बना रहे थे, और वह गठबंधन संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रतीक है, जो रोम की पहली प्रॉक्सी सेना है; तथा मकदूनिया (यूनान) संयुक्त राष्ट्र का प्रतीक है। उस प्रारम्भिक इतिहास में, उत्तर के राजा (सेल्युकस) और फिलिप (यूनान) का यह गठबंधन उस इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है जो पैनियम के युद्ध तक ले जाता है, जिसके दो सदियों बाद उस नगर का नाम पैनियम से बदलकर कैसरिया फिलिप्पी कर दिया गया। उस नगर के दोहरे नाम का उद्देश्य सेल्युकस और मकदूनिया के फिलिप के गठबंधन का स्मरण करना नहीं था।

"कैसरिया फिलिप्पी" नाम प्राचीन नगर "पनेआस" या "पानियम" के ऐतिहासिक रूपांतरण से निकला है। यह नगर मूल रूप से पनेआस कहलाता था क्योंकि यह यूनानी देवता पैन को समर्पित एक प्रमुख झरने के निकट स्थित था। यह झरना, जो प्राचीन काल में एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल था, यरदन नदी में मिल जाता था।

राजा हेरोद महान के शासनकाल में, ईसा पूर्व पहली शताब्दी के आसपास, शहर में व्यापक नवीनीकरण हुआ और उसका विस्तार तथा सौंदर्यीकरण किया गया। कैसरिया फिलिप्पी का नामकरण हेरोद महान के पुत्र हेरोद फिलिप ने किया। उसने रोमी सम्राट सीज़र ऑगस्टस के सम्मान में शहर का नाम 'कैसरिया' रखा, और अपने नाम पर 'फिलिप्पी', इस प्रकार 'कैसरिया फिलिप्पी'। अतः 'कैसरिया फिलिप्पी' 'कैसरिया'—जो सीज़र ऑगस्टस के प्रति हेरोद की श्रद्धांजलि को दर्शाता है—और 'फिलिप्पी'—जो हेरोद फिलिप का सम्मान करता है—इन दोनों का संयोजन है।

भविष्यवाणी की दृष्टि से पैनियम का संबंध सेल्युकस और मकदूनिया के फिलिप के बीच की एक संघ से है, और साथ ही सीज़र और हेरोद फिलिप के बीच के गठबंधन से भी है। ये दोनों गठबंधन उस गठबंधन की ओर संकेत करते हैं जो पुतिन के रूस के पतन (जिसका प्रतिनिधित्व सेल्युकस और फिलिप करते हैं) के बाद संयुक्त राज्य (अमेरिका) और संयुक्त राष्ट्र के बीच होता है। वे पापसी, जो माता है, और संयुक्त राज्य, जो पुत्री है, के बीच के गठबंधन का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसा कि सीज़र और फिलिप द्वारा दर्शाया गया है, जो दोनों ही रोम के प्रतिनिधि थे। मिलकर वे यह दर्शाते हैं कि संयुक्त राज्य "खाई के पार हाथ बढ़ाकर रोमी शक्ति का हाथ पकड़ता है," और "गर्त के ऊपर से हाथ बढ़ाकर आध्यात्मवाद से हाथ मिलाता है।" पद सोलह के रविवार के कानून से पहले, यह त्रि-संघ पहले से ही स्थापित कर दिया जाता है।

पैनियम यूनानी देवता पैन की उपासना के केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है। यूनानी देवता पैन को समर्पित जो झरना था, उसे उस समय "नरक के द्वार" के नाम से भी जाना जाता था, और जब यीशु वहाँ गए, तो "नरक के द्वार" के विषय में उनका कथन यूनान (वैश्वीकरण) की राजनीतिक और धार्मिक विशेषताओं तथा धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के बीच उस संघर्ष की पहचान करता है जो अंतिम दिनों में होता है। यह वही लड़ाई है जिसकी शुरुआत उस धनी राष्ट्रपति ने की थी, जिसने पद 2 में यूनान के राज्य को उकसाया था। यह एक विश्वव्यापी बाहरी लड़ाई है और साथ ही संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर की एक आंतरिक लड़ाई भी है।

ग्लोबलिज़्म का धर्म, अजगर का धर्म है, जो हमारे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वोकवाद का धर्म है। सन् 2020 में, प्रकाशित-वाक्य अध्याय ग्यारह में पहचाने गए अथाह कुंड से आने वाले पशु ने अपनी राजनीतिक और धार्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया और पृथ्वी के पशु के दोनों सींगों को मार डाला। वह अथाह कुंड, अन्य बातों के साथ-साथ, "पैन के स्रोत" द्वारा दर्शाया गया है, जो यरदन नदी को जल देता था।

यूनानी पौराणिक कथाओं में पान का संबंध प्रकृति, वन्य प्रदेश और देहाती संगीत से था, और उनके लिए समर्पित एक झरने की उपस्थिति उपासकों के लिए धार्मिक महत्त्व रखती थी। देवता पान को अक्सर बकरे के पैर, सींग और कानों के साथ चित्रित किया जाता था। पान को चरवाहों और झुंडों का देवता माना जाता था, और उन्हें अक्सर एक चंचल और शरारती देवता के रूप में दर्शाया जाता था जो जंगलों और पहाड़ों में क्रीड़ा करता फिरता था। बकरी-पाँव वाले देवता के रूप में पान की यह छवि दानियेल के आठवें अध्याय से मेल खाती है, जहाँ यूनान का प्रतिनिधित्व एक नर बकरे द्वारा किया गया है। प्राचीन यूनान में बकरियाँ सामान्य पालतू पशु थीं और वे प्रायः उन पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती थीं जहाँ पान के विचरण करने का विश्वास था। यह चित्रण पान की प्रतिमात्मक परंपरा का एक प्रमुख गुण बन गया और देवता को दर्शाने वाली यूनानी कला और साहित्य में, राष्ट्रीय मुद्रा सहित, बना रहा।

जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी गए, तब उन्होंने यह कहा कि "पाताल के फाटक" कलीसिया के विरुद्ध प्रबल नहीं होंगे। यीशु के प्रश्न के उत्तर में पतरस ने जो कहा, उसे मसीही इतिहास और परंपरा में "मसीही स्वीकारोक्ति" के रूप में समझा जाता है।

जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेशों में आया, तो उसने अपने चेलों से कहा, लोग क्या कहते हैं कि मैं, मनुष्य का पुत्र, कौन हूँ? उन्होंने कहा, कुछ कहते हैं कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है; कुछ, एलिय्याह; और कुछ, यिर्मयाह, या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई। उसने उनसे कहा, परन्तु तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ? शमौन पतरस ने उत्तर देकर कहा, तू मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र है। यीशु ने उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, तुझ पर यह प्रगट किया है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बाँधा जाएगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुल जाएगा। तब उसने अपने चेलों को आज्ञा दी कि वे किसी से न कहें कि वह यीशु मसीह है। मत्ती 16:13-20.

यह अंश महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यीशु की सेवकाई और ईसाई धर्मशास्त्र के विकास में एक निर्णायक क्षण का प्रतिनिधित्व करता है। पतरस द्वारा यीशु को मसीहा, जीवित परमेश्वर का पुत्र, स्वीकार करना ईसाई विश्वास की नींव और उस आधारशिला के रूप में देखा जाता है जिस पर कलीसिया का निर्माण हुआ है। "इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा" इस वाक्यांश को कैथोलिक परंपरा में स्वयं पतरस के संदर्भ में समझा जाता है, जिन्हें यीशु उस "चट्टान" के रूप में पहचानते हैं जिस पर कलीसिया निर्मित की जाएगी। यह व्याख्या कैथोलिक धर्मशास्त्र में पोप की प्रधानता और अधिकार का आधार बनती है।

प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र में, "चट्टान" का तात्पर्य पतरस स्वयं से नहीं, बल्कि यीशु को मसीह और परमेश्वर का पुत्र मानने वाली पतरस की विश्वास-स्वीकारोक्ति से है। इस दृष्टिकोण में, कलीसिया की नींव पतरस नहीं, बल्कि यह स्वीकारोक्ति है कि यीशु मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं। धर्मशास्त्रीय व्याख्या चाहे जो हो, मत्ती 16:13-20 में पतरस की स्वीकारोक्ति को ईसाई विश्वास में एक केंद्रीय और आधारभूत अंश माना जाता है, जो यीशु की पहचान को मसीह और परमेश्वर के पुत्र के रूप में रेखांकित करता है और कलीसिया के मिशन और उद्देश्य की पुष्टि करता है।

पिछले लेख में हमने The Desire of Ages से एक अंश प्रस्तुत किया था, जहाँ सिस्टर वाइट मसीह की कैसरिया फिलिप्पी की यात्रा से संबंधित कुछ मुद्दों की पहचान करती हैं। वह जिन बिंदुओं का उल्लेख करती हैं, उनमें से एक यह है कि कैसरिया फिलिप्पी की शिक्षाओं को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से मसीह शिष्यों को यहूदियों के प्रभाव से दूर ले गए थे।

यीशु और उनके चले अब कैसरिया फिलिप्पी के आसपास के नगरों में से एक में आ पहुँचे थे। वे गलील की सीमाओं से बाहर थे, ऐसे प्रदेश में जहाँ मूर्ति-पूजा का प्रभुत्व था। यहाँ चेलों को यहूदी धर्म के नियंत्रक प्रभाव से अलग कर दिया गया, और उन्हें मूर्तिपूजक उपासना के अधिक निकट संपर्क में लाया गया। उनके चारों ओर अंधविश्वास के वे रूप उपस्थित थे जो संसार के सब भागों में विद्यमान थे। यीशु की इच्छा थी कि इन बातों को

देखकर वे अन्यजातियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अनुभव करें। इस क्षेत्र में अपने ठहरने के दौरान, उन्होंने लोगों को शिक्षा देने से कुछ पीछे हटने और अपने आप को अपने चेलों के प्रति अधिक पूर्ण रूप से समर्पित करने का प्रयत्न किया। युगों की अभिलाषा, 411.

18 जुलाई, 2020 को, मसीह ने 11 सितंबर, 2001 के शिष्यों को लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के प्रभाव से अलग कर दिया। दस कुँवारियों के दृष्टांत में पहली निराशा ने उस आंदोलन को उपहास करने वालों की उस सभा से अलग कर दिया, जिसे पीछे छोड़ा जा रहा था। यह सत्य मिलरवादी इतिहास में 19 अप्रैल, 1844 को पूरा हुआ, और फिर 18 जुलाई, 2020 को भी। तब प्रतीक्षा का समय आरंभ हुआ, और पहले और तीसरे दोनों स्वर्गदूतों के आंदोलन में उस पर 'सत्य' की मुहर है।

पहली निराशा तीन मार्गचिह्नों में से पहली है, और इतिहास 22 अक्टूबर, 1844 की महान निराशा पर समाप्त होता है, जो प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के "महान भूकंप" का प्रतीक है। आरंभ, अर्थात् हिब्रानी वर्णमाला का पहला अक्षर, एक निराशा को दर्शाता है, और अंत, अर्थात् हिब्रानी वर्णमाला का बाईसवाँ अक्षर, भी एक निराशा को दर्शाता है। तेरहवाँ अक्षर, जो विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है, मूर्ख कुँवारियों की उस निराशा को चिन्हित करता है, जो अपनी खोई हुई दशा को तब प्रकट करती हैं जब मध्यरात्रि की पुकार यह उजागर करती है कि संकट के लिए किसने तैयारी की है और किसने नहीं। हिब्रानी वर्णमाला के बाईस अक्षर दैवत्व और मानवता के संयोग के प्रतीक हैं, जो उस इतिहास के भीतर पूर्ण होता है; यद्यपि मिलेराइट इतिहास प्रथम कादेश का प्रतिनिधित्व करता है, और हमारा आज का इतिहास अंतिम कादेश का प्रतिनिधित्व करता है।

ये दोनों रेखाएँ समानांतर हैं, पर एक परमेश्वर की प्रजा की असफलता का प्रतिनिधित्व करती है और दूसरी परमेश्वर की प्रजा की विजय का। क्रूस से ठीक पहले, यीशु अपने शिष्यों को पैनियम ले गए, ठीक वैसे ही जैसे वह अपने अन्तिम-काल के शिष्यों को पैनियम ले आए हैं, और ऐसा करते हुए उन्होंने एक निराशा को होने दिया ताकि उनके अन्तिम-काल के शिष्य लाओदीकियन एडवेंटिज़्म के "controlling influence" से हट जाएँ, जिसका प्रतिनिधित्व मत्ती अध्याय सोलह के इतिहास में "Judaism" करता है। ऐसा करते हुए, उन्होंने साथ ही अपने शिष्यों को मूर्तिपूजकता के और निकट संपर्क में ला दिया, और इस प्रकार अपने अन्तिम-काल के शिष्यों के कार्य-पर्यावरण का प्रतिनिधित्व किया, जो अब शैतानी शक्ति की पूर्ण विकसित अभिव्यक्ति के बीच जी रहे हैं, जिसका प्रतिनिधित्व आधुनिक संचार प्रणालियाँ करती हैं, जो समूचे संसार को पशु का चिह्न ग्रहण करने की ओर ले जाने के लिए प्रयुक्त की जा रही हैं।

कैसरिया फिलिप्पी का इतिहास पैनियम के युद्ध के इतिहास और पद तेरह से पंद्रह से मेल खाता है। मसीह और उनके शिष्य क्रूस की छाया में खड़े थे, जो उसके अंतिम दिनों के शिष्यों के रविवार के क्रानून की छाया में खड़े होने का प्रतीक था। वहाँ, पद तेरह से पंद्रह में—जो कैसरिया फिलिप्पी से संबंधित था—और पैनियम के युद्ध में भी—जो वही स्थिति है जिसमें हम आज खड़े हैं—मसीह ने अपने शिष्यों को यह सिखाना शुरू किया कि पद सोलह में क्या होने वाला था।

वह उन्हें उस दुःख के विषय में बताने ही वाला था, जो उसे भोगना था। परन्तु पहले वह अकेले में चला गया, और उसने प्रार्थना की कि उनके हृदय उसके वचनों को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाएँ।

मसीह ने अपने शिष्यों को क्रूस के बारे में बताने से पहले, वह पहले दूर चला गया—अर्थात् उसने विलंब किया—और इस प्रकार दृष्टान्त में और 18 जुलाई 2020 से जुलाई 2023 तक के इतिहास में विलंब के समय को चिह्नित किया।

उनके साथ मिलते ही उन्होंने वह बात तुरंत नहीं बताई जिसे वे उन्हें बताना चाहते थे। यह करने से पहले, उन्होंने उन्हें उन पर अपने विश्वास का अंगीकार करने का अवसर दिया, ताकि वे आने वाली परीक्षा के लिए दृढ़ हो सकें। युगों की अभिलाषा, 411.

जुलाई 2023 में, प्रभु ने निराशा से जुड़े लोगों को अपना विश्वास प्रकट करने का अवसर देना शुरू किया। उन्होंने यह यहजेककेल के सैंतीसवें अध्याय के संदेश को खोलकर किया, जो 11 सितंबर, 2001 के संदेश की पुष्टि थी। वह वह सूत्र था जिसने 11 सितंबर, 2001 से लेकर शीघ्र आने वाले रविवार के कानून तक की मुहरबंदी के समय को आपस में जोड़ दिया। इसने 18 जुलाई, 2020 की निराशा को सत्य की संरचना में स्थान देकर ऐसा किया, क्योंकि जो देखने को तैयार थे, वे पहचान सकते थे कि हर सुधार आंदोलन का एक मुख्य विषय होता है, जो उनके विशिष्ट पवित्र इतिहास में निरंतर चलता है।

अंतिम दिनों में तीसरे हाथ का संदेश 11 सितंबर, 2001 को आया, फिर तीसरे हाथ का एक झूठा संदेश घोषित किया गया, जिससे निराशा हुई, परन्तु वह संदेश, जिसने उन्हें साढ़े तीन दिन तक मृत, सूखी और बिखरी हड्डियाँ बने रहने के बाद फिर से जीवित कर दिया, चार पवनों का संदेश था, जो कि तीसरा हाथ भी है।

अंतिम दिनों के शिष्य, यदि वे देखना चुनें, तो देख सकते हैं कि एक लाख चवालीस हज़ार के मुद्रांकन के तीन मार्गचिह्न प्रत्येक चरण में एक ही विषय हैं, और कि दूसरे चरण में हिब्रानी वर्णमाला के तेरहवें अक्षर द्वारा दर्शाया गया विद्रोह उस संदेश की 'सत्य' के रूप में पुष्टि करता था। दूसरी गवाही जो प्रभु ने प्रदान की, वह इस तथ्य में थी कि पूर्ववर्ती सुधार आंदोलनों की पहली निराशा परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध विद्रोह पर आधारित थी—चाहे वह मूसा का अपने पुत्र का खतना न करना हो, या उज़्ज़ा का उस सन्दूक को छूना, या मरथा और मरियम का लाज़र की मृत्यु के विषय में यीशु के वचन पर संदेह करना। एकमात्र सुधार रेखा जिसने इस तथ्य का समर्थन नहीं किया कि पहली निराशा अवज्ञा पर आधारित थी, वह मिलरवादियों का सुधार आंदोलन था; परन्तु उसी समय यह भी दिखाया गया था कि मिलरवादियों के इतिहास में आंतरिक मार्गचिह्न थे, जो 'आठवां, जो सात में से है' के सत्य पर आधारित थे।

यह तथ्य कि 'आठवां सात में से है' यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य का एक प्रमुख तत्व है, जो अब खोला जा रहा है, और फिलाडेल्फिया-कालीन मिलरवादी आंदोलन का लाओदीकिया कलीसिया में संक्रमण एक ऐसा मार्गचिह्न था जो यह दर्शाता था कि कब तीसरे स्वर्गदूत का लाओदीकियाई आंदोलन एक लाख चवालीस हज़ार के फिलाडेल्फियाई आंदोलन में परिवर्तित होगा। इस प्रकार, यह तथ्य कि पहली मिलरवादी निराशा उनके आंदोलन द्वारा अवज्ञा प्रकट किए बिना ही घटित हुई, उसी मार्गचिह्न के लिए अंतिम दिनों में एक विरोधाभास प्रदान करता है, जहाँ तीसरे स्वर्गदूत का लाओदीकियाई आंदोलन अवज्ञा करेगा और एक निराशा उत्पन्न करेगा, और ऐसा करते हुए मिलरवादी मार्गचिह्न के साथ अनुरूप हो जाएगा, तथा यह समझने का तर्क देगा कि एक लाख चवालीस हज़ार का आंदोलन आठवां है, जो सात में से है।

जुलाई 2023 में, प्रभु ने अपने अन्तकाल के लोगों को रविवार के कानून के संकट के लिए तैयार करने हेतु एक 'जंगल में पुकारने वाली आवाज़' उठाई, और जब वह प्रार्थना में देर तक ठहरने के बाद चेलों के पास लौटा, तो उसने उन्हें अपने विश्वास को व्यक्त करने का अवसर दिया। मसीह के दिनों में संदेश उसका बपतिस्मा था, वह बिंदु जहाँ यीशु यीशु मसीह बन गया। वह मार्गचिह्न 11 सितंबर, 2001 के साथ मेल खाता है, और उसके चेलों से पूछा गया कि लोग क्या सोचते हैं, और फिर उनसे यह पूछा गया कि वे स्वयं मसीह के विषय में क्या सोचते हैं।

"उनसे मिलते ही, उन्होंने तुरंत वह बात नहीं कही जो वे उन्हें बताना चाहते थे। यह करने से पहले, उन्होंने उन्हें अपने प्रति अपना विश्वास स्वीकार करने का अवसर दिया, ताकि वे आने वाली परीक्षा के लिए दृढ़ हो सकें। उन्होंने पूछा, 'लोग क्या कहते हैं कि मैं, मनुष्य का पुत्र, कौन हूँ?'"

दुख की बात है कि शिष्यों को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि इस्राएल अपने मसीहा को पहचान न सका था। कुछ ने तो, उनके चमत्कार देखकर, उन्हें दाऊद का पुत्र घोषित किया था। बेतसैदा में जिन्हें भोजन कराया गया था, वे उन्हें इस्राएल का राजा घोषित करना चाहते थे। बहुत से लोग उन्हें भविष्यद्वक्ता मानने को तैयार थे; पर वे उन्हें मसीहा नहीं मानते थे। *The Desire of Ages*, 411.

एडवेंटिज़्म के अधिकांश लोग 11 सितंबर, 2001 की तीसरी विपत्ति पर विश्वास नहीं करते थे। वे आंदोलन में प्रस्तुत किए गए भविष्यवाणी के वचन के कुछ चमत्कारों पर विश्वास करते थे, और कुछ ने समझा कि 11 सितंबर, 2001 के संदेश में सत्य के कुछ तत्व थे, लेकिन वे 11 सितंबर, 2001 के दावों पर वास्तव में विश्वास नहीं करते थे।

11 सितंबर, 2001 के दावे का पूर्वचित्रण 11 अगस्त, 1840 के दावे द्वारा किया गया था, और उस दावे को सिस्टर व्हाइट ने 11 अगस्त, 1840 की पूर्ति पर टिप्पणी करते समय व्यक्त किया। उन्होंने कहा:

"ठीक उसी समय जो निर्दिष्ट किया गया था, तुर्की ने अपने राजदूतों के माध्यम से यूरोप की सहयोगी शक्तियों का संरक्षण स्वीकार कर लिया, और इस प्रकार उसने अपने आपको मसीही राष्ट्रों के नियंत्रण के अधीन कर दिया। इस घटना ने भविष्यवाणी को ठीक-ठीक पूरा कर दिया। जब यह ज्ञात हुआ, तो बहुत से लोग मिलर और उसके सहयोगियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के सिद्धांतों की सत्यता के विषय में आश्चर्य हो गए, और आगमन आंदोलन को एक अद्भुत प्रेरक बल प्राप्त हुआ। विद्या और प्रतिष्ठा वाले पुरुष, मिलर के विचारों के प्रचार और प्रकाशन—दोनों में—उसके साथ जुड़ गए, और 1840 से 1844 तक यह कार्य तीव्र गति से फैलता गया।" —The Great Controversy, 334, 335.

11 अगस्त, 1840 को यह पुष्टि हुई कि मिलर के भविष्यसूचक विचार सही थे, और 11 सितंबर, 2001 का दावा इस बात की पुष्टि है कि फ्यूचर फॉर अमेरिका के भविष्यसूचक विचार सही हैं। जुलाई 2023 में पश्चात्ताप न करने वाली भीड़ न तो इस धारणा को स्वीकार कर सकी और न ही करना चाही कि मसीह द्वारा निर्धारित और फ्यूचर फॉर अमेरिका को सौंप दी गई पद्धति वास्तव में अंतिम वर्षा की पद्धति है। परन्तु तब मसीह ने अपने चेलों से पूछा कि वे, भीड़ नहीं, क्या सोचते हैं।

"अब यीशु ने दूसरा प्रश्न किया, जो स्वयं शिष्यों से संबंधित था: 'परन्तु तुम मुझे कौन कहते हो?' पतरस ने उत्तर दिया, 'तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र है।'"

आरम्भ से ही पतरस ने यीशु को मसीह माना था। बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना के उपदेश से जिनके मन में दोष-बोध जागा था और जिन्होंने मसीह को स्वीकार किया था, वे जब यूहन्ना को कैद कर दिया गया और मार डाला गया, तो उसके कार्य पर सन्देह करने लगे; और अब वे इस पर भी सन्देह करने लगे कि यीशु वही मसीह हैं, जिसके आने की वे इतने समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। उन चेलों में से बहुत-से, जिन्होंने बड़ी उत्कंठा से यह आशा की थी कि यीशु दाऊद के सिंहासन पर विराजेंगे, जब उन्होंने देखा कि यीशु का ऐसा कोई इरादा नहीं है, तो वे उन्हें छोड़कर चले गए। परन्तु पतरस और उसके साथी अपनी निष्ठा से न डिगे। जो कल प्रशंसा करते थे और आज निन्दा करते हैं, उनके डगमगाते रवैये ने उद्धारकर्ता के सच्चे अनुयायी के विश्वास को नहीं डिगाया। पतरस ने कहा, 'तू मसीह है, जीवते परमेश्वर का पुत्र।' उसने अपने प्रभु पर राजसी सम्मान का मुकुट चढ़ने की प्रतीक्षा नहीं की, परन्तु उसकी दीनावस्था में ही उसे स्वीकार किया।

पतरस ने बारहों के विश्वास को व्यक्त किया था। फिर भी चले मसीह के उद्देश्य को समझने से अभी भी बहुत दूर थे। याजकों और शासकों का विरोध और उनके द्वारा किया गया गलत प्रस्तुतीकरण, उन्हें मसीह से तो दूर नहीं कर सका, परन्तु इससे वे बहुत उलझन में पड़े। उन्हें अपना मार्ग स्पष्ट दिखाई नहीं देता था। उनके प्रारम्भिक प्रशिक्षण का प्रभाव, रब्बियों की शिक्षाएँ, परम्परा की शक्ति—ये सब अभी भी सत्य को देखने में बाधा बने हुए थे। समय-समय पर यीशु से आने वाली अमूल्य प्रकाश की किरणें उन पर चमकती थीं, फिर भी वे प्रायः छायाओं के बीच टटोलते हुए मनुष्यों के समान थे। परन्तु उस दिन, उनके विश्वास की महान परीक्षा का सामना करने से पहले, पवित्र आत्मा सामर्थ्य सहित उन पर ठहरा। थोड़े समय के लिए उनकी आँखें 'जो देखी जाती हैं' से हटकर 'जो नहीं देखी जाती' को निहारने लगीं। 2 कुरिन्थियों 4:18. मानवीय वेश के पीछे उन्होंने परमेश्वर के पुत्र की महिमा को पहचाना।

यीशु ने पतरस को उत्तर देकर कहा, 'धन्य है तू, शमौन बर-योना; क्योंकि यह बात तुझे मांस और रक्त ने नहीं प्रकट की, परन्तु मेरे पिता ने, जो स्वर्ग में है।' द डिज़ायर ऑफ एजेज, 412.

मसीह को परमेश्वर का पुत्र ठहराने वाली पीटर की स्वीकारोक्ति उस इतिहास की कसौटी के प्रश्न को सीधे संबोधित करती थी। परमेश्वर के भविष्यद्वाणी वचन के अनुसार मसीहा के प्रकट होने का समय आ चुका था, और केवल वही लोग, जो उस सत्य को स्वीकार करते थे, पीटर के कथन द्वारा दर्शाए गए लोगों में शामिल माने जाते थे। पीटर उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो 11 सितंबर, 2001 को स्थापित संदेश को स्वीकार करते हैं, और जो यह अंगीकार करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। "पीटर ने बारहों का विश्वास व्यक्त किया था," और जिन बारह का वह प्रतिनिधित्व करता था, वे एक लाख चवालीस हजार थे। इसी कारण, उस खंड में मसीह ने उसका नाम 'साइमन बार-योना' से बदलकर 'पीटर' रखा।

"साइमन" का अर्थ "जो सुनता है" है, और "बार" का अर्थ "का पुत्र" है, और योना का अर्थ "कबूतर" है। साइमन ने उन लोगों का प्रतिनिधित्व किया जिन्होंने कबूतर का संदेश सुना, जो यीशु के बपतिस्मा से संबंधित सच्चाइयों का प्रतीक था, जब वह मसीह बना, सामर्थ से अभिषिक्त होकर, जैसा कि पवित्र आत्मा के कबूतर के रूप में उतरने से प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया था।

सुधार की रेखाएँ एक-दूसरे के समानांतर हैं और यूहन्ना मिलराइट्स का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्होंने 11 अगस्त, 1840 को छोटी पुस्तक खाई। यिर्मयाह उस घटना के अनुरूप है, और जब उसने छोटी पुस्तक खाई, तब उसे परमेश्वर के नाम से बुलाया गया।

तेरे वचन मिले, और मैंने उन्हें खा लिया; और तेरा वचन मेरे हृदय के आनन्द और हर्ष का कारण हुआ; क्योंकि मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ, हे सेनाओं के यहोवा परमेश्वर। यिर्मयाह 15:16.

जब प्रभु ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी, तब उन्होंने उसका नाम बदलकर अब्राहम कर दिया, जैसा उन्होंने सारे और याकूब के साथ किया था। नाम का बदलना वाचा-संबंध को दर्शाता है, और जिस मार्गचिह्न पर दिव्य प्रतीक अवतरित होता है, वहाँ परमेश्वर के लोगों को संदेश को ग्रहण करना, वाचा में प्रवेश करना है, और तब उनका नाम बदल दिया जाता है। मसीह के समय के चेलों के प्रतिनिधि के रूप में, शिमोन बार-योना उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जिन्होंने "कबूतर" का संदेश "सुना" था।

जब उसने यह गवाही दी कि उसने पहचान लिया कि उस निर्णायक पड़ाव पर यीशु मसीह बने, और कि वे परमेश्वर के पुत्र थे, और इससे जुड़े सभी निहितार्थों सहित, तब मसीह ने उसका नाम बदलकर पतरस रखा। उसने वह संदेश प्रकट किया जिसे उस इतिहास में मसीह की वाचा-जनता ने स्वीकार किया, और ऐसा करते हुए वह अंतिम दिनों के एक लाख चवालीस हजार का भी प्रतीक बना।

अक्षर "P" अंग्रेज़ी वर्णमाला का सोलहवाँ अक्षर है, और अक्षर "E" वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर है, और अक्षर "T" बीसवाँ अक्षर है, अक्षर "E" दोहराया गया है, और नाम का अंत अक्षर "R" से होता है, जो अठारहवाँ अक्षर है। सोलह "गुना" पाँच, "गुना" बीस, "गुना" पाँच, "गुना" अठारह बराबर एक लाख चवालीस हजार होता है। अद्भुत भाषाविद् ने Peter से हिब्रू में बात की, और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था, और किंग जेम्स संस्करण के अनुवादकों ने नया नियम अंग्रेज़ी में अनूदित किया।

भाषाई भिन्नताओं के तीन स्तरों के बावजूद, मसीह, जो परमेश्वर के पुत्र, अद्भुत भाषाविद् और अद्भुत गणक हैं, ने मत्ती अध्याय सोलह में एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाए जाने का एक चित्रण प्रस्तुत किया, जो पानियम के युद्ध और उनकी कैसरिया फिलिप्पी की यात्रा से मेल खाता है। उन्होंने यह कार्य भाषा और संख्याओं पर अपने प्रभुत्व का उपयोग करके किया, क्योंकि वे पालमोनी (अद्भुत गणक) भी हैं और वचन (अद्भुत भाषाविद्) भी।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

करीब दो हजार वर्ष पहले, स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन से एक रहस्यमय महत्त्व वाला स्वर सुनाई दिया, 'देखो, मैं आता हूँ।' 'बलि और भेंट तू नहीं चाहता, पर मेरे लिए तू ने एक देह तैयार की है.... देखो, मैं आता हूँ (पुस्तक

के पृष्ठों में मेरे विषय में लिखा है), हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करने के लिए।' इब्रानियों 10:5-7. इन वचनों में उस उद्देश्य की पूर्ति की घोषणा की गई है जो सनातन युगों से छिपा हुआ था। मसीह हमारे संसार में आने और अवतार लेने ही वाले थे। वह कहते हैं, 'मेरे लिए तू ने एक देह तैयार की है।' यदि वे उस महिमा के साथ प्रकट होते जो संसार होने से पहले पिता के साथ उनकी थी, तो हम उनकी उपस्थिति के प्रकाश को सह न पाते। ताकि हम उसे देख सकें और नष्ट न हों, उनकी महिमा के प्रकटीकरण पर आवरण डाल दिया गया। उनकी दिव्यता को मानवता से ढँक दिया गया—अदृश्य महिमा दृश्य मानवीय रूप में।

इस महान उद्देश्य का पूर्वाभास प्रकारों और प्रतीकों द्वारा कराया गया था। वह जलती हुई झाड़ी, जिसमें मसीह मूसा पर प्रकट हुए, परमेश्वर को प्रकट करती थी। परमेश्वर के प्रतिनिधित्व के लिए चुना गया प्रतीक एक साधारण, तुच्छ-सी झाड़ी थी, जिसमें देखने में कोई आकर्षण नहीं था। यही अनंत को अपने में समेटे हुए थी। सर्वदयालु परमेश्वर ने अपनी महिमा को अत्यन्त विनम्र रूप में आच्छादित कर दिया, ताकि मूसा उस पर दृष्टि कर सके और जीवित रह सके। इसी प्रकार दिन में बादल के स्तम्भ में और रात में आग के स्तम्भ में, परमेश्वर ने इस्राएल से संवाद किया, मनुष्यों पर अपनी इच्छा प्रकट की और उन्हें अपना अनुग्रह प्रदान किया। परमेश्वर की महिमा को संयत किया गया, और उनका वैभव ओट में रखा गया, ताकि सीमित मनुष्यों की दुर्बल दृष्टि उसे देख सके। इसी प्रकार मसीह 'हमारी दीनता का शरीर' (फिलिपियों 3:21, R. V.), 'मनुष्यों की समानता में' आने वाले थे। संसार की दृष्टि में उनमें ऐसा कोई सौंदर्य न था कि वे उन्हें चाहें; तौभी वे देहधारी परमेश्वर थे, स्वर्ग और पृथ्वी का प्रकाश। उनकी महिमा ढकी हुई थी, उनकी महानता और वैभव छिपे हुए थे, ताकि वे दुखी और प्रलोभित मनुष्यों के निकट आ सकें।

“परमेश्वर ने इस्राएल के लिए मूसा को आज्ञा दी, 'वे मेरे लिए एक पवित्रस्थान बनाएं, ताकि मैं उनके बीच में निवास करूँ' (निर्गमन 25:8), और वह अपने लोगों के बीच पवित्रस्थान में निवास किया। उनकी सारी थकावट भरी मरुभूमि की भटकन के दौरान उसकी उपस्थिति का प्रतीक उनके साथ था। इसी प्रकार मसीह ने हमारे मानव शिविर के बीच अपना डेरा डाला। उसने मनुष्यों के तम्बुओं के पास अपना तम्बू गाड़ा, ताकि वह हमारे बीच निवास करे, और हमें अपने दिव्य चरित्र और जीवन से परिचित कराए। 'वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच डेरा किया (और हमने उसकी महिमा देखी—ऐसी महिमा, जैसी पिता के इकलौते की), अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण।' यूहन्ना 1:14, R. V., margin.”

जब से यीशु हमारे बीच वास करने आए, हमें यह ज्ञात है कि परमेश्वर हमारी कठिनाइयों से परिचित है और हमारे शोक-दुःखों के प्रति सहानुभूति रखता है। आदम की हर संतान यह समझ सकती है कि हमारे सृष्टिकर्ता पापियों का मित्र है। क्योंकि अनुग्रह की हर शिक्षा, आनंद का हर वचन, प्रेम का हर कार्य, और पृथ्वी पर उद्धारकर्ता के जीवन में प्रकट हर दिव्य आकर्षण में हम 'परमेश्वर हमारे साथ' देखते हैं।

शैतान परमेश्वर के प्रेम की व्यवस्था को स्वार्थ की व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत करता है। वह घोषित करता है कि उसकी आज्ञाओं का पालन करना हमारे लिए असंभव है। हमारे प्रथम माता-पिता का पतन और उससे उत्पन्न समस्त विपत्तियों का दोष वह सृष्टिकर्ता पर लगाता है, ताकि लोग परमेश्वर को पाप, दुःख और मृत्यु का कर्ता समझें। यीशु को इस धोखे को उजागर करना था। हम में से एक बनकर उन्हें आज्ञाकारिता का उदाहरण देना था। इसी के लिए उन्होंने मानव-स्वभाव धारण किया, और हमारे अनुभवों से होकर गुजरे। 'हर बात में उसे अपने भाइयों के समान बनना आवश्यक था।' इब्रानियों 2:17। यदि हमें ऐसी कोई बात सहनी पड़ती जो यीशु ने नहीं सही, तो इसी आधार पर शैतान परमेश्वर की सामर्थ्य को हमारे लिए अपर्याप्त ठहराता। इसलिए यीशु 'सब बातों में हमारी तरह प्रलोभित हुआ।' इब्रानियों 4:15। हम जिन-जिन परीक्षाओं के अधीन होते हैं, वे सब उसने सह लीं। और उसने अपने लिए ऐसी कोई सामर्थ्य का उपयोग नहीं किया जो हमें भी स्वतंत्र रूप से प्रदान न की गई हो। मनुष्य के रूप में उसने प्रलोभन का सामना किया, और परमेश्वर से मिली सामर्थ्य द्वारा उस पर जय पाई। वह कहता है, 'हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा को करने में प्रसन्नता मानता हूँ; हाँ, तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में है।' भजन 40:8। जब वह भलाई करता फिरता और शैतान से पीड़ित सबको चंगा करता था, तब उसने लोगों के सामने परमेश्वर की व्यवस्था के चरित्र और उसकी सेवा के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया। उसका जीवन यह गवाही देता है

कि परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना हमारे लिए भी संभव है।

अपनी मानवता के द्वारा मसीह ने मानवजाति को छुआ; अपनी दिव्यता के द्वारा वह परमेश्वर के सिंहासन को थाम लेते हैं। मनुष्य के पुत्र के रूप में उन्होंने हमें आज्ञाकारिता का आदर्श दिया; परमेश्वर के पुत्र के रूप में वे हमें आज्ञा मानने की शक्ति देते हैं। होरेब पर्वत की झाड़ी में से मूसा से यह कहने वाला मसीह ही था: 'मैं जो हूँ सो हूँ... इस प्रकार तू इस्राएल की सन्तानों से कहना, मैं जो हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' निर्गमन 3:14। यह इस्राएल की मुक्ति की प्रतिज्ञा थी। इसलिए जब वह 'मनुष्यों के समान' आया, तो उसने अपने आप को 'मैं हूँ' घोषित किया। बेतलेहेम का बालक, वह नम्र और दीन उद्धारकर्ता, 'देह में प्रकट' परमेश्वर है। 1 तीमुथियुस 3:16। और हमसे वह कहता है: 'मैं ही अच्छा चरवाहा हूँ।' 'मैं जीवित रोटी हूँ।' 'मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।' 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।' यूहन्ना 10:11; 6:51; 14:6; मत्ती 28:18। 'मैं हूँ' हर प्रतिज्ञा का आश्वासन हूँ। 'मैं हूँ; मत डरो।' 'परमेश्वर हमारे साथ' पाप से हमारी मुक्ति की जमानत है, और स्वर्ग की व्यवस्था का पालन करने की हमारी सामर्थ्य का आश्वासन है। युगों की अभिलाषा, 23, 24।